मिथिलाक संस्कृति परचोट

(पंचायत प्रधान ने किया पहल)

कहु–कहु माँ बूढ़ा बाबा–मिथिला, मैथिल कोशि मायक हाल
कतऽ गेल ओ पोखड़ि, कुँआ माईनक पंकज सिंधार कश्वे मांछ मखान
बीज्जू आमक गाछ कतऽ गेलि चना देसरिया, खैड़ी दूधी सिंगरा घान।
ई सब पहिलूक बात सुनि कऽ पश्चाप सँ औखिकसॅ नोर टपकैये।

घर–घर में चापाकल लगाल आइरन, अमोनियां, आर्सैनिक कीड़ा आपस,
माल, मवेशी, माय भाय सब मेल बिमार तयो चापाकल अछि प्रिय हिनक यार।
डॉक्टर, व्यापारीक हाल जूनि पूछु तहिया–तहिया कैँ राखे छथि माल,
कहु–कहु ओ बूढ़ा बाबा मिथिला, मैथिल कोशी मायक हाल।

मेघ पाईन, कुंआ, मटका फिल्टर से सब कियो हिलमिल रिश्ता जोडु
अपच, गैस्टिक, मलेरिया, जौनडिस, कालाजार, पर हम पावी काबू।
तृतीय गृह युद्धक आशंका के आत्म नियंत्रण से दूर भगावू,
फायदेमंद शौचालय अपनाकऽ स्वच्छता स्वास्थ्य लाचारी पर काबू पावू।